NEWS:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:30 PM Page 198

दैनिक जागरण

...और खुद उदाहरण बन गए नानाजी देशमुख

कानपुर, लोकेश प्रताप सिंह। तब तो गोंडा जिले के इटियाथोक विकास खंड के गांव जानकीनगर तक पहुंचने के लिए तंग पगडंडियों से कोसों पैदल चलना पड़ता था। करीब तीन सौ परिवारों की मिश्रित आबादी वाले गांव में वह सब कारण मौजूद थे, जिसके कारण उसे गरीब और संसाधनहीन कहा जाय। वर्ष 1981 में नानाजी देशमुख ने सबसे पिछड़े गांव की तलाश करते हुए जब जानकी नगर में पैर रखा तो कहा कि यह तो तीर्थ है और यहां के लोग देवतातुल्य हैं। कुछ ही वर्षों में यही गांव जयप्रभा ग्राम के रूप में वाकई तीर्थ बन गया, जिसे लोग ग्राम्य विकास की अनूठी अनुसंधानशाला मानने लगे।

बात 1981 की ही है। तब नानाजी जनसंघ के प्रदेश संगठनमंत्री के रूप में बड़ी राजनीतिक शख्सियत थे। केकनहल्ली, कर्नाटक में उस समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने देशभर के जिला प्रचारकों की बैठक आयोजित की थी, जिसमें संघ के प्रचारक होने के नाते नानाजी भी शरीक हुए। तत्कालीन सर संघचालक बालासाहब देवरस की मौजूदगी में नानाजी ने सुझाव दिया कि राजनीतिक क्षेत्र में कार्य करने वालों को 60 वर्ष की आयु के बाद वह कार्य छोड़कर सेवा कार्य को अपने हाथ में ले लेना चाहिए। अनुभवी बालासाहब ने कहा कि 60 वर्ष की आयु के बाद ही तो व्यापक अनुभव लोगों के पास होता है। राजनीतिक क्षेत्र से सेवा क्षेत्र में जाने का ऐसा कोई उदाहरण तो अब तक सामने नहीं आया। फिर क्या था नानाजी ने खुद उदाहरण बनने की ठान ली और उसी बैठक से सीधे लखनऊ के बजाय गोंडा पहुंच गये। वहां पर सबसे पिछड़े गांव की तलाश करते हुए जानकीनगर पहुंचे और अपनी कुटिया डाल दी। गांव में जमीन थी, किंतु परती और बंजर। पेड़ थे, लेकिन लकड़ी का कोई खास उपयोग नहीं था। चरागाह थे, किंतु पशुओं की संख्या गिनती भर थी। पुराने तालाब थे, लेकिन पट जाने से वे सूखे थे। खाई-खंदक पर औषधीय वनस्पतियां थीं, लेकिन उन्हें न तो कोई पहचानने वाला था, न ही उपयोग लायक बनाने वाला। नानाजी ने गांव के ही लोगों को प्रेरित कर जहां तालाबों की सफाई करवाकर जल संरक्षण का प्रबंध किया, वहीं कंपोस्ट-गोबर की खाद के जरिए परती भूमि को उपजाऊ बनवा दिया। घर-घर गाय-भैंस व बैल का पालन शुरू हुआ। पांच वर्षों के भीतर ही गांव की तस्वीर और तकदीर इस कदर बदल गयी कि खुद तत्कालीन राष्ट्रपति ने जयप्रभा ग्राम जाकर देखा तो आश्चर्यचकित रह गये। नानाजी यहीं पर दीनदयाल शोध संस्थान की नींव डाली, जिसका उद्देश्य ही अंत्योदय है। हर हाथ को काम, हर खेत को पानी का नारा भी यहीं नानाजी ने ही दिया था। इस गांव की प्रेरणा से गोंडा के कई गांव अपने ही संसाधनों का उपयोग करके विकसित हो गए।

जनसंघ के संस्थापकों में शुमार नानाजी को 60 के दशक से ही कांग्रेसी नाना फणनवीस और चाणक्य जैसी उपाधियों से नवाजते थे। संपूर्ण क्रांति आंदोलन में जेपी की गिरफ्तारी के बाद नानाजी ने ही सबसे पहले भूमिगत आंदोलन की शुरूआत की। चौधरी चरण सिंह का कांग्रेस से विद्रोह करवाकर उत्तर प्रदेश में चंद्रभानु गुप्त सरकार को अपदस्थ करवाने के पीछे भी मुख्य भूमिका नानाजी की ही रही। इतने जबर्दस्त राजनीतिक कौशल के बावजूद उन्होंने कभी खुद किसी पद की इच्छा नहीं रखी। दिल्ली से लेकर चित्रकूट तक दीनदयाल शोध संस्थान की गतिविधियां जगजाहिर हैं।

पीपुल्स समाचार

नानाजी का पार्थिव शरीर एम्स को सौंपा

...और खुद उदाहरण बन गए नानाजी देशमुख

देशबन्धु

नानाजी को श्रद्धांजलि देने उमड़े संघ परिवार के लोग

संघ परिवार के सबसे बड़े नेताओं में एक नानाजी देशमुख को श्रद्धांजलि देने के लिए आज झंडेवालान स्थित संघ कार्यालय में भीड़ उमड़ी। संघ परिवार के कई आला नेताओं ने देश के कोने-कोने से आकर उनके पार्थिव शरीर पर पुष्पांजलि अर्पित की।

शनिवार को नानाजी के निधन के बाद आज मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान चार्टर्ड प्लेन से उनके शव को लेकर दिल्ली पहुंचे। नानाजी की इच्छा थी कि उनके शव को चिकित्सीय अनुसंधान के लिए दान कर दिया जाए। आज दोपहर में संघ मुख्यालय केशव कुंज में दर्शनार्थ उनका शव रखने के बाद शाम में एम्स को दान कर दिया गया। संघ नेता सुरेश सोनी, मदनदास देवी सहित वरिष्ठ भाजपा नेता लालकृष्ण आडवानी, सुषमा स्वराज, अरुण जेटली, नितिन गडकरी, राजनाथ सिंह आदि ने उनके शव पर पुष्पांजलि अर्पित की। राज्यों से छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान व गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उनको पुष्पांजलि दी। इस मौके पर डॉ. रमन सिंह ने शोक पुस्तिका में नानाजी द्वारा सामाजिक व शैक्षणिक क्षेत्र में किए गए कार्यों का उल्लेख किया। उन्होंने लिखा कि नानाजी ने दीनदयाल जी के आदर्श व कल्पना को प्रयोग रूप में साकार किया। डॉ. सिंह के अनुसार उनके स्वावलम्बन, ग्रामीण आत्मनिर्भरता और सामाजिक व शैक्षणिक क्षेत्र में किए गए कार्य हमारे जैसे लाखों लोगों के लिए प्रेरणा के रूप में काम करते रहेंगे। मुख्यमंत्री ने लिखा कि वे राज्य के दो करोड़ दस लाख लोगों की ओर से नानाजी को पुष्पांजलि अर्पित करते हैं। वहीं म.प्र. के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि नानाजी हम जैसे लोगों के लिए बचपन से प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। उन्होंने कहा कि दीनदयाल जी के चिंतन व आदर्शों को उन्होंने प्रयोग रूप दिया।

भोपाल सोमवार 1 मार्च 2010

नानाजी को श्रद्धांजलि देने उमड़े संघ परिवार के लोग